

---

# Shrimad Bhagavadgita Ashtakam

---

## श्रीमद्भगवद्गीताष्टकम्

---

### Document Information

Text title : Bhagavadgita Ashtakam

File name : bhagavadgItAShTakam.itx

Category : giitaa, aShTaka, krishna

Location : doc\_giitaa

Author : Swami Achyutanand

Proofread by : PSA Easwaran

Latest update : June 25, 2022

Send corrections to : sanskrit@cheerful.com

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

June 25, 2022

*sanskritdocuments.org*

---

श्रीमद्भगवद्गीताष्टकम्



॥ श्रीकृष्णो विजयतेतराम् ॥

नमः श्री राघवानन्द-पदपङ्कजरेणवे ।  
यत्कृपालवमात्रेण अहमज्ञोऽपि तारितः ॥

॥ अथ श्रीमद्भगवद्गीताष्टकम् ॥

वेदार्थतत्त्वनिपुणैः सादसि प्रगीतां  
अज्ञानतान्तपटलं परिकर्षयन्तीम् ।  
विज्ञानसूक्तिभिरलङ्कतगात्रशोभां  
गीतां भजामि सततं जगदर्कवर्णाम् ॥ १ ॥

श्रीकृष्णसुन्दरमुखप्रभवां सुशीलां  
आदौ सुधीररणकर्कशजिष्णुपीताम् ।  
विज्ञानत्त्वनिचयां निगमैकवेद्यां  
गीतां भजामि सततं सकलार्थसाराम् ॥ २ ॥

श्रीशङ्करादिकृतभाष्यपवित्रसूक्तिः  
अद्वैतवादशिशिरीकतमञ्जुवाणी ।  
सुश्लोकसप्तशतनिर्मितपुष्पवल्ली  
गीता करोतु विमलं कलुषं मनो मे ॥ ३ ॥

शान्तिप्रवाहमधुराक्षरयुक्तिपूर्णां  
दुष्टप्रतर्कवनमक्षणकाननाग्निः ।  
शीतांशुवर्षणकरी भवती प्रसिद्धा  
गीता सदा वसतु मे हृदये प्रसन्ना ॥ ४ ॥

पीत्वा न तृप्तिमगमन् मुनयो न सिद्धाः  
विद्याधरासुरनराधिपसार्वभौमाः ।  
सङ्गीतशास्त्रगुणमण्डितपण्डितौघाः

यत्सारमच्युतमुखप्रभवं विशुद्धम् ॥ ५ ॥

मातर्महामहिमशालिनि विश्वन्द्ये  
संसारजन्ममृतिरोगविनाशशीले ।  
निर्वाणमुक्तिमुकुटीकृतभावदात्रि  
गीते मदीयरसनानिलये वस त्वम् ॥ ६ ॥

यादित्यचन्द्रकिरणैरपि दुर्विभाव्यं  
मोहात्मकं तिमिरमाशु जनप्रविष्टम् ।  
दूरीकरोति दुरितं वचसा मनोजं  
तामीश्वरीं भगवतीं प्रणमामि गीताम् ॥ ७ ॥


दृष्टं न शास्त्रनिगमेषु समं भवत्याः  
माधुर्यवाक्यकलिताक्षरभावपूर्णम् ।  
वेदान्ततत्त्वमणिमण्डितनिर्विकल्पं  
अत्र त्वमेव जयतान्नितरां सुगीते ! ॥ ८ ॥

गीताष्टकमिदं प्रोक्तमच्युतानन्दभिक्षुणा ।  
यः पठेद्भक्तिभावेन तस्य गीता प्रसीदति ॥


इति श्रीस्वामि अच्युतानन्दकृतं  
श्रीमद्भगवद्गीताष्टकं सम्पूर्णम् ।

Proofread by PSA Easwaran

---

——  
*Shrimad Bhagavadgita Ashtakam*

pdf was typeset on June 25, 2022

——  
Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

